The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com

योग गुरु स्वामी रामदेव के दार्शनिक विचार

अखिलेश यादव
असि.प्रो. (शिक्षाशास्त्र विभाग)
श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय आजमगढ़
E-mail.- yakhilesh147@gmail.com

योग गुरु रामदेव के दार्शनिक विचार –:

महर्षि पतन्जलि ने पूरे दुनियाँ के मानवता को जिस योग व प्राणायाम का ज्ञान हजारों वर्ष पूर्व दिया था। जिसे आज स्वामी रामदेव आगे बढ़ाने का काम व प्रचारित कर रहे हैं। योग–प्राणायाम व आयुर्वेद की विद्या जो आज विलुप्त के कागार पर है उसे स्वामी रामदेव व आचार्य बालकृष्ण ने अपने अथक परिश्रम व संघर्ष से जीवित बनाये हुए हैं। आज के समय में मोटापा, मधुकेह, उच्चरक्तचाप, हृदय रोग व माइग्रेन से पीड़ित आधुनिक पीढ़ी के लिए स्वामी रामदेव एक उम्मीद के रूप में बन गये हैं। योग की जटिलता समाप्त हो चुकी है और बीमार निरोग हो रहे हैं। स्वामी रामदेव की प्रसिद्धि चरम पर पहुँच चुकी है। जब 5 फरवरी 1995 में 'दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट' शुरू किये तो आम जनमानस से लेकर कार्पोरेट तक से दान मिलना शुरू हो गया। 5 रुपये से लेकर लाखों रुपये का दान व लोगों का भरोसा के कारण स्वामी रामदेव व आचार्य बालकृष्ण 'योग–आयुर्वेद क्रान्ति' ला दिये। 'दिव्य योग' नामक पौधा मात्र 10 साल में 5 फरवरी 2005 को पतन्जलि योगपीठ के रूप में योग–आयुर्वेद–स्वदेशी–वैदिक ज्ञान परम्परा का वटवृक्ष बन गया है। यह उन महान ऋषि–मुनियों व योग विद्या के जनक महर्षि पतन्जलि और आयुर्वेद के जनक धनवन्तरि, चरक, सुश्रुत आदि से आधुनिक पीढ़ी को रूबरू का एक ऐसा प्रयास था, जिसके बारे में सदियों तक किसी भारतीय सन्त–महात्मा ने सोचा तक नहीं था।[1]

स्वामी रामदेव जी कहते हैं कि–''पवित्र आहार, पवित्र व्यवहार, पवित्र आचरण ही पवित्र जीवन का आधार है।''

कहा गया है कि–

''जीवन जितना ही सादा होगा,

तनाव उतना ही आधा होगा।

योग करें या न करें,

लेकिन जरूरत पड़ने पर एक दूसरे का सहयोग जरूर करें।''

स्वामी जी के अनुसार–''अपने आहार में, विचार में, वाणी में, व्यवहार में, साधना में एक–एक क्षण संयम रखना, यह साधना का, साधक के जीवन का मूल नियम है।''

नित्य दैनिक जीवन में लोगों को योग को अपनाने व उन्हें प्रेरित करने के लिए निम्न पंक्तियों के माध्यम से उनमें योग के प्रति भाव जगाने का प्रयास किया गया है–

जो करते हैं योग, उन्हें नहीं छूते रोग।

सुबह उठकर करो योग, खुद से दूर भगाओं रोग।।

सामाजिक दर्शन –:

पतन्जलि योग पीठ के द्वितीय खण्ड में लगभग 4 लाख वर्ग फिट के एक बहुत बड़े सभागार को बनाया गया है। जहाँ पर विभिन्न जगहों से आये हुए योग साधक एक साथ बैठकर योग, प्राणायाम व ध्यान करते हैं। योग शिविर में आने वाले साधकों को ठहरने, भोजन की व्यवस्था शंकर वानप्रस्थ आश्रम व भारत स्वाभिमान कार्यालय में की गयी है। प्राचीन ऋषि–मुनियों के नाम पर सात खण्डों में आवासीय क्षेत्र बनाया गया है। प्रत्येक खण्ड को मिलाकर आधुनिक सुविधाओं से युक्त लगभग 1000 से अधिक कमरे बनाये गये हैं। कुछ लोग स्वामी रामदेव को व्यवसायी होने का आरोप लगाते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है, वहाँ जन साधारण को भी उतनी सुविधाएँ देने का प्रयास है जितना पहले केवल अमीरों को रहती है। जैसा कि गाँधी जी के 'ट्रस्टीशिप' का आशय था कि सम्पन्न वर्ग से लेकर विपन्न वर्ग तक सुविधाओं को पहुँचाने की यह व्यवस्था ही सच्ची समाजवादी व न्याय संगत व्यवस्था है। जहाँ से मातृदेवो भवः और दलित देवो भवः, पितृदेवो भवः व ऋषि देवो भवः का दर्शन व कार्य से प्रस्फुटित होता है।

स्वामी रामदेव स्वयं कहते हैं कि–''भारतीय ज्ञान व आध्यात्मिक परम्परा में सेवाभाव हमारें प्राणों से जुड़ा है। बिना सेवा के चित्त की शुद्धि नहीं होती है और बिना चित्तशुद्धि के परमात्मतत्व की अनुभूति नहीं होती है। अतः हमेशा सेवा के अवसर ढूढ़ते रहना चाहिए।''[पप]

प्रत्येक योग साधक के लिए स्वामी जी का स्पष्ट सन्देश होता है कि–'चित्र की नहीं चरित्र की पूजा करो। व्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व की पूजा करो। हम मात्र पत्थर की मूर्ति के पूजक बनकर हीं जीवन न जियें। हम चैतन्य के उपासक बनकर पाषाण हृदयों में योगशक्ति से भक्ति एवं राष्ट्र चेतना का प्रवाह जगाएं।'

आध्यात्मिक दर्शन –:

स्वामी रामदेव मूलतः आर्य सनातन संस्कृति व वैदिक परम्परा के अनुयायी हैं, क्योंकि दयानन्द सरस्वती के पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' ने बाल्यकाल से ही उनके जीवन में प्रकाश भर दिया था, जिसके बाद अंग्रेजों के द्वारा लायी गयी शिक्षा प्रणाली को त्यागकर गुरुकुल की शिक्षा ग्रहण करने के लिए घर से भागे थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती की तरह स्वामी रामदेव भी लोगों से आह्वान करते हैं कि–भारतीय ऋषि ज्ञान परम्परा और वैदिक संस्कृति की ओर लौटें, जिसका मूल आधार वेद व उपनिषद है। स्वामी जी कहते हैं कि–''मेरी खुद की प्रेरणा व अभिप्सा का मुख्य श्रोत वेद, उपनिषद, गीता और योगदर्शन रहा है।''[पपप]

स्वामी रामदेव का पूरा 'स्वधर्म' उस भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन की अभिव्यक्ति है। उपनिषदों में ऋषियों ने 'अहं ब्रह्मास्मि' नाम दिया है। स्वामी जी कहते हैं, इस ब्रह्म वाक्य को न भूलने वाला ही सच्चा योगी होता है। जैसा कि योगी को कभी स्वयं को दीनहीन, दुःखी और असहाय नहीं मानना चाहिए। उनके अन्तःकरण में यह होना चाहिए कि मैं ही विराट हूँ। मैं परमात्मा का प्रतिनिधि हूँ। मेरा जन्म पृथ्वी पर कुछ महान उद्देश्य को लेकर हुआ है। मुझमें धरती जैसा धैर्य, अग्नि जैसा तेज, वायु सा वेग, जल जैसी शीतलता व आकाश जैसा विराटभाव होना चाहिए। मैं नश्वर देह नहीं, मैं अमर–अजर–नित्य अविनाशी ज्योतिर्मय आत्मा हूँ।

जब स्वामी रामदेव पतन्जलि योगपीठ में रहते हैं तो उनका दिन भी ब्रह्ममुहूर्त में यज्ञ–हवन से ही प्रारम्भ होता है। पतन्जलि के अन्दर का पूरा वातावरण ही वैदिक ऋचाओं जैसा पवित्र लगता है।

स्वामी रामदेव के सम्पूर्ण जीवन में गीता जैसा ज्ञान झलकता है। उनसे जब मिला जाए या बातचीत किया जाए तो उनके अन्दर अहंकार नाम की कोई जगह नहीं है। वे कहते हैं कि–'कर्म ही मेरा धर्म है और कर्म ही मेरी पूजा। कर्म ही जीवन व जगत का सत्य है। निष्काम कर्म भाव, कर्म का अभाव नहीं है, बल्कि इसमें कर्तव्य के बोध से उत्पन्न अहंकार का अभाव अवश्य होता है।

स्वामी जी धर्म के सम्बन्ध में कहते हैं कि–'सार्वभौमिक व वैज्ञानिक सत्य ही धर्म है, जो सार्वभौमिक व वैज्ञानिक मापदण्डों पर खरा नहीं उतरता वहीं धर्म नहीं है वह भ्रम है। श्रेष्ठ आचरण का नाम ही धर्म है। धार्मिक व्यक्ति में श्रेष्ठता होनी चाहिए। अहिंसा, सत्य, प्रेम, करुणा, वात्सल्य, सेवाभाव, संयम व सदाचार ही जीवन का श्रेष्ठ आचरण होना चाहिए। इसलिए वहीं श्रेष्ठ धर्म भी है, सभी धर्मों में यह समान है।

योग दर्शन –:

आज स्वामी रामदेव को जो प्रसिद्धि मिली है उसका एक ही कारण है–'योग'। मूलतः वे एक योगी हैं। जिसका पूरा जीवन दर्शन केवल दो अक्षर–'योग' में हीं समाहित है। स्वामी जी कहते हैं कि–'योग जीवन दर्शन है, योग प्रबन्धन है, योग समाधि है, योग आत्मदर्शन है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि आत्मानुशासन है, सम्पूर्ण जीवन शैली है। योग चित्त (मन) को निर्मल व शुद्ध करने की आध्यात्मिक विद्या है। योग जीवन विज्ञान के साथ–साथ चिकित्सा विज्ञान भी है। योग व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व विश्व की सम्पूर्ण समस्याओं का एक मात्र समाधान भी है।'[पअ]

स्वामी रामदेव कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि–'समत्वं योग उच्यते।' अर्थात् अंधेरे को उजाले में, दुःख को सुख में, प्रतिकूलता को अनुकूलता में व पराजय को विजय में बदलने की सम्पूर्ण शक्ति मनुष्य के भीतर विद्यमान है। राग, शोक, संकट या संघर्ष यहाँ तक कि मृत्यु को भी मात देने की शक्ति तुम्हारे

अन्दर विद्यमान है। इसलिए बिना विचलित हुए समान भाव से जीवन में निरन्तर आगे बढ़ना चाहिए, एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी–यही योग है।

योग पूर्ण स्वास्थ्य सामन्जस्य, शान्ति, समृद्धि का मार्ग है। आप सभी योग पूर्वक उद्योग करें और योग पूर्वक कर्म करें। परस्परता में समग्रता और समष्टि का, सुख का सिद्धान्त है योग। सब प्रकार की पूर्णता का मार्ग है योग।[अ]

स्वामी रामदेव कहते हैं कि जो योग मुक्त होंगे वे रोग मुक्त होंगे, नशा मुक्त होंगे, दुःख मुक्त होंगे, उनके जीवन में जितने भी दुःख हैं, दर्द हैं, अंधेरे हैं, जो भी निराशाएँ हैं, कुण्ठाएँ हैं सब मिट जाएगी। योग करने वाला जीते जी वैकुण्ठ में जीता है, जीते जी जीवन मुक्त हो जाता है, जीवन मुक्त होकर जीता है, जीवन मुक्त सहज समाधि, सहज ध्यान उसको उपलब्ध हो जाता है, जो योग करता है।[अप]

स्वदेशी का प्रसार –:

स्वदेशी निर्मित वस्तुओं को धरा पर उतारने के लिए स्वयं स्वामी रामदेव कहते हैं कि–'पहले मेरे पास लोग आते थे कि बाबा साबुन से लेकर दन्त पेस्ट तक दवा से लेकर वस्त्र तक विदेशी कम्पनी का प्रयुक्त करना पड़ता है, फिर जीवन में कैसे स्वदेशी अपनाएं? इसके बाद मेरे मन में विचार आया कि स्वदेशी आन्दोलन को सफल बनाना है, तो दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं (उत्पादों) की एक श्रृंखला लोगों को उपलब्ध करानी होगी, अन्यथा स्वदेशी आन्दोलन भी पूर्व की भाँति ही दम तोड़ देगा।'

आज के समय में स्वामी रामदेव व आचार्य बालकृष्ण के संयुक्त नेतृत्व में 'दिव्य फार्मेसी' व 'पतन्जलि आयुर्वेद' स्वदेशी आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण कर रहा है और 'पतन्जलि फूड एवं हर्बल पार्क लिमिटेड' दैनिक उपयोग की जरूरत की चीजों व रसोई से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामान का निर्माण कर स्वदेशी विचार धारा को धरातल पर उतारने में जुटा है।'[अपप]

स्वामी रामदेव के अनुसार–'हमारे उत्पादों की गुणवत्ता अन्य कम्पनियों की तुलना में श्रेष्ठ इसलिए है कि हम इन उत्पादों का विक्रय व्यापार के लिए नहीं, अपितु स्वदेशी के सपनों को मूर्त रूप देने के लिए कर रहे हैं। हम भारत के हर एक गाँव तक स्वदेशी उत्पादों को उपलब्ध कराना चाहते हैं, जिससे कि प्रत्येक भारतवासी के जीवन में स्वदेशी का अपनापन सुनिश्चित हो सके।

'पतन्जलि फूड एवं हर्बल पार्क लिमिटेड' के लिए कच्चा माल पतन्जलि के जैविक खेती विधि से प्राप्त होता है। स्वामी जी बड़ी संख्या में किसान के खेत को गोंद ले लिये हैं। इन किसानों को जैविक खेती करना सिखाया जाता है। खेती के लिए खाद व बीज की भी व्यवस्था की जाती है। कृषि प्रधान देश में आत्महत्या करते किसान को यदि ऐसी सुविधा दी जाए तो हमारे देश का कोई किसान गतल कदम नहीं उठायेगा। स्वामी रामदेव के स्वदेशी इकाई से 15 हजार से अधिक लोग प्रत्यक्ष रूप से रोजगार में लगे हैं। जबकि अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोग लगे हैं। स्वामी रामदेव कहते हैं कि–'यह योग क्रांति से कृषि क्रांति का बढ़ता हुआ कदम है। स्वास्थ्य व स्वदेशी के इस महाभियान से कृषि के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति पैदा होगी। उस क्रान्ति से कृषकों व कृषि पर अपनी आजीविका चलाने वाले मजदूरों के लिए समृद्धि, स्वावलम्बन व आत्मसम्मान का द्वार खुलेगा।

आदर्श ग्राम का निर्माण –:

स्वामी रामदेव कहते हैं कि–'मेरी प्रमुख प्राथमिकताओं में से देश में आदर्श ग्राम का निर्माण करना भी है। नमूना के तौर पर उन्होंने चुनिन्दा गांवों में 11 सूत्री कार्यक्रम की शुरुवात किये हैं। इसके अन्तर्गत प्रत्येक गांव को प्रत्येक दृष्टिकोण से स्वास्थ्य, संगठित, रोग व नशा मुक्त, स्वदेशी व स्वावलम्बी बनाना है। प्रत्येक गांव में जड़ी–बूटी पौधों की रुपाई, विषमुक्त खेती, जल संसाधन, स्वच्छता पर विशेष बल और ग्राम संसद की व्यवस्था पर विशेष आकर्षण है, जिससे कि गांव पूरी तरह से आत्मनिर्भर हो सके।' स्वामी जी कहते हैं कि–'गांव का सर्वांगीण विकास न होने के कारण, गरीबी, अशिक्षा व अन्यत्र पलायन जैसी अनेक समस्याएँ खड़ी हुई हैं। भारत का जन्म ही गांवों मं हुआ है। जैसा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि–''भारत गांवों में बसा है।'' वर्तमान में दुर्भाग्य से भारत अपनी आन्तरिक विभाजन से लड़ रहा है। एक 'शाइनिंग इण्डिया' है तो दूसरा 'दरिद्र भारत'। जैसा कि ग्राम स्वराज के बिना राष्ट्र में सच्चा स्वराज कहां से आएगा? इस प्रकार हमें इसके लिए ही मजबूती से काम करने की जरूरत है।'[अपपप]

विषमुक्त खेती का अभियान –:

स्वामी रामदेव कहते हैं कि विषयुक्त बीज, खाद व कीटनाशक न केवल भारत की खेती को नुकसान पहुँचा रहे हैं, बल्कि उत्पन्न अनाज भी मनुष्य के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। कैंसर जैसी बिमारियाँ तेजी से फैल रही हैं, जो बिषयुक्त भोजन का ही परिणाम है। ऐसी स्थिति में गो (गोबर खाद) आधारित कुदरती खेती को आगे बढ़ाने की जरूरत है। ऐसी खेती से कम लागत में ज्यादा उपज होगी, जिससे किसान भी खुशहाल होगा और हमारे देश का किसान भी समृद्धशाली होगा।

देशी खाद, बीज व कीटनाशक के सम्बन्ध में अभी भी देश में कोई मानकीकरण नहीं है। जिसको जो मन आ रहा है, उसे बाजार में उतार दे रहा है। जिससे कि भारत की कृषि व्यवस्था को भारी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। स्वामी जी कहते हैं कि–'पतन्जलि योग पीठ में कई एकड़ भूमि पर प्राकृतिक खेती व देशी बीजों का प्रयोग करने व उसे बचाने का व्यावहारिक प्रयोग चल रहे हैं। भारत स्वाभिमान संगठन 'किसान पंचायत' के माध्यम से लाखों किसानों को कुदरती (प्राकृतिक) खेती का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया है।'

स्वामी जी कहते हैं कि–'हम कृषि में एक महत्वपूर्ण बदलाव के लिए काम कर रहे हैं, जिससे औषधीय, फलदार पेड़ों की खेती के लिए हम देश के किसानों को जागरूकता के साथ–साथ प्रोत्साहित व मदद भी करेंगे। ऐसे फलदार पेड़ उन किसानों के लिए अतिरिक्त आमदनी का माध्यम साबित होंगे। जिससे कि वे गांव में छोटा–मोटा कुटीर उद्योग स्थापित कर सकेंगे।'[पग]

गोवंश का संवर्धन एवं संरक्षण –:

स्वामी रामदेव कहते हैं कि–'गाय एवं अन्य दुधारू पशुओं के नस्ल में सुधार अभियान को हम आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। जिससे कि कम दूध देने वाले पशु अधिक दूध दे सकें, जिससे कि पशुपालकों के घर में समृद्धि आ सके। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर स्वामी जी सबसे उन्नत गोशाला व नंदीशाला का निर्माण करने जा रहे हैं।' स्वामी जी कहते हैं कि–'देशी नस्ल की गाय, विदेशी नस्ल की गाय से कही अधिक दूधारू व उत्तम होती है। देश में आधुनिक गोशाला और नन्दीशाला नहीं रहने के कारण, पशुपालकों के पास

विकल्प नहीं है। हम देश को समृद्ध पशुओं का विकल्प उपलब्ध करायेंगे जिससे कि प्रत्येक पशुपालक दूध की छोटी डेयरी चलाने की क्षमता हासिल कर सकें। आने वाले वर्षों के लिए स्वास्थ्य उन्नत पशु के लिए पौष्टिक पशु आहार, पशु औषधि व उनके लिए चारा के क्षेत्र में बड़े स्तर पर बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है। अभी तक पशुओं को कुछ भी खिला दिया जाता है, उनके स्वास्थ्य पर ठीक ढ़ंग से ध्यान नहीं रखा जाता, ये सब अज्ञानता व संसाधन की अनुपलब्धता के कारण ही हो रहा है। इसे भी दूर करने का शीघ्र प्रयास चल रहा है।'[ग]

सन्दर्भ सूची –:

1. बालकृष्ण, आचार्य, *विचार क्रान्ति,* दिव्य प्रकाशन पतंजलि योगपीठ, चतुर्थ संस्करण–2016।
2. महेन्द्रू, डॉ. के.सी., *बाबा रामदेव के सपनों का भारत,* डायमंड पाकेट बुक्स, प्रा.लि., नई दिल्ली।
3. योग सन्देश, वर्ष : 7, अंक–6, फरवरी–2010।
4. योग सन्देश, वर्ष : 8, अंक–9, मई–2011।

---

1. *देव, संदीप –स्वामी रामदेव एक योगी–एक योद्धा, पृ.सं. 84*
2. *वहीं पृ.सं. 91, 93*
3. *वहीं पृ.सं. 94*
4. *वहीं पृ.सं. 95*
5. *स्वामी रामदेव लाइव 30 अप्रैल 2022*
6. *https://www.hindisahityadarpan.in 28 फरवरी 2012*
7. *वहीं पृ.सं. 120*
8. *वहीं पृ.सं. 126*
9. *वहीं पृ.सं. 227*
10. *वहीं पृ.सं. 228*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number October-2023/30
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

अखिलेश यादव

for publication of research paper title

"योग गुरु स्वामी रामदेव के दार्शनिक विचार"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-03, Month October, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY

THE
RESEARCH
DIALOGUE
Manifestation Of Perfection